सत्यमेव जयते

राजस्थान सरकार

जिला बारां
पंच गौरव कार्यक्रम
जिला पुस्तिका

लहसुन उपज

लहसुन फलेक्स

लहसुन पापड

लहसुन आचार

रामगढ क्रेटर

रामगढ क्रेटर

चिरौंजी

फुटबॉल

सत्यमेव जयते

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच–गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में **पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित** किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच–गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

अनुक्रमणिका

क्रं सं.	विभाग	पंच गौरव	पृष्ठ संख्या
1	कृषि एवं उद्यान विभाग	एक जिला–एक उपज–लहसुन	1–2
2	जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द	एक जिला–एक उत्पाद–लहसुन उत्पाद	3–6
3	वन विभाग (पर्यटन)	एक जिला–एक पर्यटन स्थल–रामगढ क्षेटर	7–8
4	वन विभाग	एक जिला–एक वनस्पति प्रजाति–चिरौंजी	9–14
5	खेल विभाग	एक जिला–एक खेल–फुटबॉल	15–16

1 कृषि एवं उद्यान विभाग

पंच गौरव एक जिला–एक उपज–लहसुन

बारां जिले की प्रमुख मसाला फसल लहसुन की वर्तमान स्थिति एवं प्रसंस्करण उत्पाद

लहसुनः बारां जिला लहसुन फसल में क्षेत्रफल उत्पादन और उत्पादकता की दृष्टि से राजस्थान में प्रथम स्थान पर है। पिछले सालों में राज्य में औसत 89 हजार 805 हैक्टेयर में बुवाई होकर औसत उत्पादकता 5916 किलोग्राम रही है। जिसमें बारां जिले का औसत क्षेत्रफल 30 हजार 714 हैक्टेयर रहा और उत्पादकता 6133 किलोग्राम रही है।

क.सं.	वर्ष	क्षेत्रफल (हैक्ट0)	उत्पादन	उत्पादकता	प्रसंस्करण उत्पाद
1	2016–17	40670	283999	6983	पाउडर, निर्जलीकृत कलियां, लहसुन पेस्ट, अचार, लहसुन बटी
2	2017–18	41779	237018	5673	
3	2018–19	23380	161579	6911	
4	2019–20	23975	173095	7220	
5	2020–21	32268	210354	5800	
6	2021–22	29805	172855	5800	
7	2022–23	22631	116131	5678	
8	2023–24	31211	156055	5000	
9	2024–25	37828	181574	4800	

➢ **जिले में लहसुन विपणन हेतु कृषि उपज मण्डीयां–** बारां एवं छीपाबडोद

क्र.सं.	उत्पाद	नाम कृषि उपज मण्डी	आवक (क्विंटल में)			
			वर्ष 2021–22	वर्ष 2022–23	वर्ष 2023–24	वर्ष 2024–25 (अनुमानित)
1	लहसुन	बारां	903591	873463	677963	270791
2		छीपाबडोद	713071	726789	944749	602515
योग			1616662	1600252	1622712	873306

2 जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र, बारां

पंच गौरव – एक जिला–एक उत्पाद–लहसुन उत्पाद

बारां जिले में लहसुन आधारित उत्पादों का संक्षिप्त विवरण

- बारां जिले में ओडीओपी उत्पाद के रूप में लहसुन उत्पादों का चयन किया गया है। बारां जिले में प्रतिवर्ष औसतन 30714 हैक्टेयर क्षैत्र में लहसुन की बुवाई होती है, साथ ही जिले में लहसून की औसतन उत्पादकता 6133 किग्रा. प्रति हैक्टेयर है।
- बारां जिले में छीपाबडौद व बारां कृषि उपज मण्डी को विशेष लहसुन मण्डी घोषित किया गया है। यहां बारां जिले एवं मध्यप्रदेश के समीवर्ती जिलों से भी लहसुन की आवक व विपणन कार्य होता है।
- **<u>लहसुन के प्रमुख उत्पाद</u>** :–
  लहसुन आधारित उत्पादों में मुख्य रूप से लहसुन पाउडर, कलियां, पेस्ट, पापड, आचार, फलेक्स, बल्ब चटनी आदि तैयार किये जाते है जो कि स्थानीय स्तर के अतिरिक्त समीपवर्ती जिलों एवं राज्यों में भी विक्रय किये जाते है। इसके अतिरिक्त लहसुन उत्पादों का निर्यात भी किया जाता है।

लहसुन फलेक्स

लहसुन पापड

लहसुन आचार

लहसुन पाउडर

- **<u>लहसुन उत्पादों का उपयोग</u>** :–
  लहसुन उत्पादों का उपयोग मुख्य रूप से मसालों के रूप में काम में किया जाता है। लहसुन की कलियां, पेस्ट एवं पाउडर का प्रयोग सब्जियों, पापड़, दवाइयों आदि बनानें में किया जाता है।

<u>लहसुन उत्पादों के फायदे</u> :–

- हृदय रोगों से बचाव, रक्तचाप कम करने में सहायक होता है।
- प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाता है एवं सर्दी, जुखाम, संक्रमणों आदि से लड़ने में मदद करते हैं।
- पाचन एंजाईमों को सक्रिय करते है एवं पाचन तंत्र को स्वस्थ रखता है।
- कैंसर से बचाव में सहायक है।
- ब्लड शुगर को नियंत्रित करते हैं।
- त्वचा के संक्रमणों से लडने में मदद करता है उदा0 (डैण्ड्रफ आदि को कम करता है)।
- श्वसन तंत्र हेतु लाभकारी।
- लहसुन शरीर को डिटॉक्स करने में भी असरदार साबित होता है।
- लहसुन कोलेस्ट्रोल की समस्या में भी सहायक होता है।

<u>सावधानियां</u> :–

- दवाईयों का सेवन कर रहे व्यक्ति को लहसुन से एलर्जी हो सकती है।
- गर्भवती व स्तनपान कराने वाली महिलाएँ लहसुन के सेवन से पूर्व डाक्टर की सलाह ले।

बारां जिले में लहसुन उत्पादों की निम्न इकाईयां स्थापित हैः–

क्र0सं0	इकाई का नाम व पता	उत्पाद
1	रिच रिटर्न कृषि प्रोडॅयूसर कं0 लि0, अंता	लहसुन के पापड, आचार, पाउडर, फ्लेक्स आदि।
2	बिसौती डिहाईड्रेडस, रीको ओ0क्षे, बारां	लहसुन पेस्ट, पाउडर, फलेक्स आदि।
3	निरोगधाम आंवला प्रसंस्करण उद्योग, बोहत तहसील मांगरोल	लहसुन आचार एवं चटनी।
4	लहसुन उत्कृष्टता केन्द्र, अन्ता	लहसुन सोर्टिंग्स, ग्रेडिंग, बल्ब, पाउडर, कलियां एवं पेस्ट।

एक जिला एक उत्पाद (लहसुन उत्पाद)

(1) पूर्व में किए गए कार्य

1. एक जिला एक उत्पाद कार्यक्रम के तहत लहसुन उत्पाद की स्थापित इकाईयों को मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना के तहत दो इकाईयों मैसर्स बिसौती डिहाईड्रेटस, ओ0क्षे0 बारां एवं निरोगधाम आंवला प्रसंस्करण उद्योग, बोहत को ब्याज अनुदान का लाभ प्रदान किया गया है।

2. योजना के तहत कार्यालय द्वारा लहसुन उत्पादों एवं नई इकाईयों की स्थापना हेतु विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के माध्यम से प्रदान किए जाने वाले लाभों की जानकारी हेतु शिविर आयोजित किए गए।

3. एक जिला एक उत्पाद कार्यक्रम के तहत लहसुन उत्पादों की जिला स्तरीय राईजिंग राजस्थान इन्वेस्टर्स मीट में जिले में स्थापित इकाईयों के उत्पादों का प्रदर्शनी के माध्यम से प्रचार–प्रसार किया गया।

4. लहसुन उत्पादों को प्रोत्साहित करने हेतु, जिला स्तर पर गठित उद्योग संघों के साथ जिला स्तरीय निर्यात संवर्धन समिति की बैठक एवं संगोष्ठी आयोजित की गई।

(2) भविष्य में किए जाने वाले कार्य

1. एक जिला एक उत्पाद कार्यक्रम के तहत लहसुन उत्पादों हेतु आवश्यक बुनियादी ढांचे का विकास करना।

2. गुणवत्तापूर्ण एक जिला एक उत्पाद कार्यक्रम के तहत उत्पादों के निर्माण हेतु जागरूकता शिविरों, बैठकों, संगोष्ठी का आयोजन करना।

3 एक जिला एक उत्पाद कार्यक्रम के तहत उत्पादों से जुडी इकाईयों को राष्ट्रीय प्लेटफार्म यथा जैम, इण्डिया बिजनेस पोर्टल आदि पर शामिल करना।

4. एक जिला एक उत्पाद कार्यक्रम के तहत उत्पादों की मार्केटिंग हेतु आवश्यक सहयोग करना।

(3) राईजिग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेट समिट 2024 के अन्तर्गत ODOP ईकाइयो द्वारा किये गये एमओयूः–

राईजिग राजस्थान के तहत जिले में दो ईकाईयो क्रमश बिसौती ईण्डस्ट्रीज औ0क्षे बारां एवं किशनगंज कृषि प्रोडयूशर कम्पनी लि. बारां द्वारा गार्लिक प्रसस्करण ईकाईयो की स्थापना करने हेतु एमओयू किये गये है जिनकी प्रस्तावित निवेश राशि लगभग 10 करोड रूपये है उक्त ईकाईया विभागीय योजनाओ एवं एक जिला एक उत्पाद पोलिसी के तहत लाभ व सुविधाए प्राप्त कर सकती है।

3 वन विभाग (पर्यटन)

पंच–गौरवः एक जिला एक पर्यटन स्थल–रामगढ क्रेटर

राजस्थान सरकार की पंच–गौरव योजना के तहत, जिसमें प्रत्येक जिले में एक प्रमुख पर्यटन स्थल विकसित करने की योजना है, रामगढ़ क्रेटर को बारां जिले के प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में चयनित किया गया है।

परिचयः–

रामगढ़ क्रेटर राजस्थान के बारां जिले के रामगढ़ गाँव के निकट स्थित एक महत्वपूर्ण भूगर्भीय संरचना है, जिसका व्यास लगभग 3.5 किलोमीटर है। यह भारत के कुछ दुर्लभ उल्कापिंड प्रभाव क्रेटरों में से एक है। हाल ही में, राजस्थान सरकार ने इसे देश की पहली भू–विरासत स्थल के रूप में मान्यता दी है। यह स्थल न केवल प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर है, बल्कि ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। रामगढ़ पहाड़ी पर स्थित अन्नपूर्णा–कृष्णाई माता का मंदिर श्रद्धालुओं के लिए एक प्रमुख आकर्षण है। इसके अतिरिक्त, क्रेटर के किनारे 10वीं शताब्दी में निर्मित खजुराहो शैली का भंडदेवरा शिव मंदिर स्थित है, जो अपनी अद्भुत वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है।

रामगढ क्रेटर

रामगढ क्रेटर

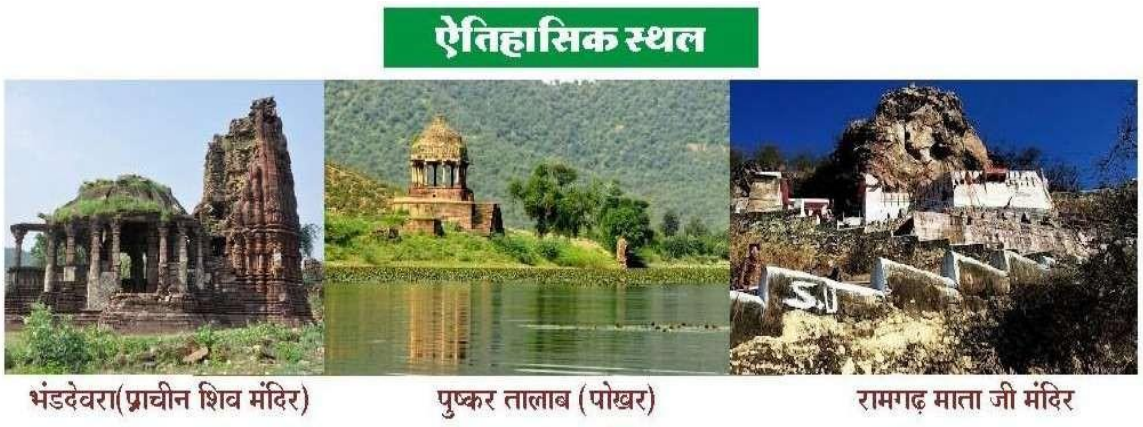

वन विभाग द्वारा पंच गौरव कार्यक्रम के अंतर्गत एक जिला एक पर्यटन – रामगढ़ क्रेटर के संरक्षण एवं विकास हेतु किए गए कार्य

घोषणा से पूर्व किए गए प्रयास–

1.रामगढ़ क्रेटर क्षेत्र को वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के अंतर्गत रामगढ़ संरक्षण रिजर्व के रूप में अधिसूचित किया गया।

2.क्रेटर के भीतर स्थित पुष्कर तालाब परिसर को वेटलैंड (संरक्षण एवं प्रबंधन) नियम, 2017 के तहत संरक्षित आर्द्रभूमि के रूप में अधिसूचित किया गया।

घोषणा के पश्चात उठाए गए कदमः–

1. 9 करोड रूपये की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (DPR) तैयार कर उच्च कार्यालय को प्रस्ताव हेतु भेजी जा चुकी है । जिसमें रामगढ़ क्रेटर विकास के लिए ट्री हाउस, टेंट कैंपिंग, वॉच टावर, प्रकृति पथ और साइक्लिंग ट्रेल विकसित किए जाएंगे । पुष्कर तालाब का सौंदर्यीकरण और ब्रह्मा कुंड का पुनरुद्धार किया जाएगा। सौर ऊर्जा प्रबंधन को बढ़ावा देने के साथ ही शौचालय और पेयजल सुविधाओं की व्यवस्था होगी। पर्यटकों की सुविधा के लिए इंटरप्रिटेशन सेंटर, कैफेटेरिया और नौका जेट्टी का निर्माण होगा, जहां बोटिंग के लिए नौकाएं उपलब्ध कराई जाएंगी ।
2 .इसे इकोटूरिज्म स्थल के रूप में विकसित करने हेतु बारां की कार्य आयोजना के अध्याय 13 में शामिल किया गया है ।

3 बारां जिला परिषद में राज्य सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में दो दिवसीय प्रदर्शनी में विभागीय स्टॉल पर रामगढ़ क्रेटर की प्रदर्शनी लगाई गई ।

4 रामगढ़ क्रेटर को संरक्षित करने हेतु वहां गार्ड चौकी के निर्माण के लिए निविदा जारी की जा चुकी है। यह राजस्थान वन अधिनियम, 1953 और वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के अंतर्गत आवश्यक कार्रवाई को सशक्त करेगा।

चल रहे प्रयासः–

1. क्षेत्र में किसी भी प्रकार के अतिक्रमण को रोकने और हटाने की त्वरित कार्रवाई।
2. वन मण्डल बारां स्तर पर विशेष गश्ती दल की स्थापना, जिससे सुरक्षा और निगरानी सुनिश्चित हो सके।
3. वनाग्नि नियंत्रण उपायों का प्रभावी कार्यान्वयन एवं आग लगने की स्थिति में त्वरित प्रतिक्रिया प्रणाली का संचालन
4. भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) के साथ निरंतर समन्वय के लिए एक समर्पित टीम का गठन किया जाएगा, जो इस महत्वपूर्ण भूवैज्ञानिक धरोहर को दीर्घकालिक संरक्षण प्रदान करेगी।
5. पुरातत्व विभाग द्वारा भण्डदेवरा मंदिर, जिसे "राजस्थान का खजुराहो" भी कहा जाता है, की मरम्मत और रखरखाव के लिये कदम उठाये जा रहे है।

4 वन विभाग

पंच गौरव एक जिला–एक वनस्पति प्रजाति–चिरोंजी

राजस्थान सरकार की पंच–गौरव योजना के तहत, प्रत्येक जिले में एक प्रमुख वनस्पति या वृक्ष प्रजाति का चयन कर उसके सतत विकास एवं सतत दोहन की प्रभावी योजना बनाई जानी है, जिससे पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ स्थानीय समुदायों को भी आर्थिक लाभ प्राप्त हो। चिरोंजी को बारां जिले के प्रमुख प्रजाति के रूप में चयनित किया गया है।

परिचयः–

चिरौंजी आदिवासियों के लिए आशा जनक फल है

चिरौंजी, एक बहुमूल्य सूखा फल है, जो उष्ण कटिबंधीय और उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों के मिश्रित शुष्क पर्णपाती जंगलों में बीज द्वारा प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। यह शुष्क भूमि बागवानी के लिए लाभदायक फल वृक्ष है। बारां जिले के शाहाबाद वन क्षेत्र में अनुकूल जलवायु होने के कारण चिरौंजी वृक्ष पाया जाता है।

चिरौंजी या चारोली (Buchanania lanzan)

कृषि वानिकी और सामाजिक वानिकी का एक पेड़ है । बंजर भूमि विकास और शुष्क भूमि बागवानी में, यह अपने विविध उपयोगों और प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता के कारण बहुत महत्व रखता है । वर्तमान में, यह एक कम उपयोग किए गए फल के रूप में वन की स्थिति में बढ़ रहा है और देश के आदिवासी समुदाय को मौद्रिक पुरस्कार देता है और उनके लिए वरदान प्रतीत होता है। यह पूर्वी हिमालयी जंगलों को छोड़कर पूरे देश में शुष्कपर्णपाती जंगल में पाई जाने वाली मूल्यवान प्रजाति है। पके फल का गूदा बहुतस्वादिष्ट होता है और इसे बड़े पैमाने पर कच्चा या भून कर खाया जाता है और तैलीय गिरी सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होती है और इसका उपयोग मिठाई और हलवा बनाने में किया जाता है। फल का मेसोकार्प खाने योग्य होता है और बच्चों द्वारा पसंद किया जाता है । गिरी अत्यधिक पौष्टिक और प्रोटीन (18प्रतिशत) से भरपूर होती है और मीठा तेल देती है, जिसका उपयोग जैतून और बादाम के तेल के विकल्प के रूप में किया जा सकता है । गिरी में 33.50 प्रतिशत तेल, 1.90 प्रतिशत वसा होता है ।

मिट्टी और जलवायु रूचिरौंजी एक बहुत ही कठोर पौधा है और पथरीली और बजरी वाली लाल मिट्टी पर अच्छी तरह से पनपता है । हालांकि यह एक बहुत ही कठोर पेड़ है, लेकिन पौधे जल भराव की स्थिति में जीवित नहीं रह पाते । यह बंजर चट्टान की दरारों के बीच मिट्टी के ढेर में भी उग सकता है। हालांकि, इसकी बेहतर वृद्धि और उत्पादकता के लिए, अच्छी तरह से सूखी हुई गहरी दोमट मिट्टी आदर्श है। यह उष्ण कटिबंधीय और उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु को पसंद करता है और सूखे को अच्छी तरह से झेल सकता है।

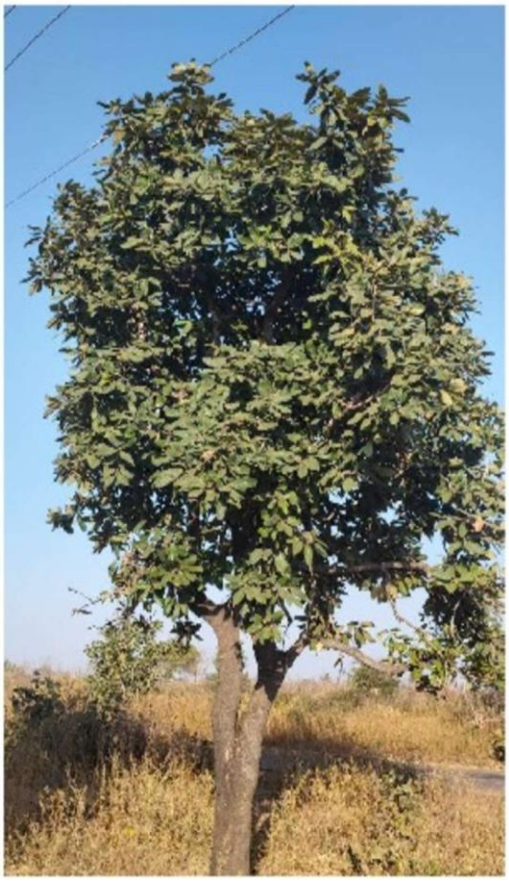

एक जिला एक प्रजाति - चिरौंजी

वन विभाग,बारां

चिरौंजी (Buchanania lanzan) की वर्तमान स्थिति

बारां में चिरौंजी की उपलब्धता

• चिरौंजी (ठनबींदंदपंसंद्रंद) प्राकृतिक रूप से उष्ण कटिबंधीय और उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु वाले शुष्क एवं आर्द्र पर्णपाती वनों में पाई जाती है।

• बारां जिले के शाहबाद वन क्षेत्र में चिरौंजी के वृक्ष प्राकृतिक रूप से उपलब्ध हैं।

• वनों की कटाई, शहरीकरण, अवैज्ञानिक दोहन एवं जागरूकता की कमी के कारण चिरौंजी वृक्षों की संख्या में गिरावट दर्ज की जा रही है ।

कुछ क्षेत्रो में चिरौजी की वर्तमान उपलब्धताः–

•बारां जिले के शाहबाद वन क्षेत्र में चिरौंजी वृक्ष सीमित मात्रा में पाए जाते हैं ।

• स्थानीय किसान एवं ग्रामीण समुदाय चिरौंजी के विभिन्न भागोंकृफल, बीज, पत्तियां, जड़ और छाल का उपयोग करते हैं । चिरौंजी की पत्तियों, छाल और जड़ से तैयार काढ़े का सेवन किया जाता है। चिरौंजी के बीजों को कच्चा या भून कर खाया जाता है तथा विभिन्न व्यंजनों में अखरोट जैसे स्वाद के लिए उपयोग किया जाता है ।

• वर्तमान में चिरौंजी की व्यावसायिक खेती या बड़े पैमाने पर रोपण की कोई सुव्यवस्थित प्रणाली विकसित नही हुई है ।

• अधिकांश किसान एवं ग्रामीण समुदाय चिरौंजी के व्यावसायिक लाभों से अनभिज्ञ हैं, जिसके कारण इसका व्यावसायिक उत्पादन प्रोत्साहित नहीं हो पाया है ।

चिरौजी संवर्धन को सरकार की योजनाओं से जोडनाः–

- सरकार द्वारा संचालित योजनाऐ जैसे TOFR (Tree Outside Forests) RFBP (River Front Biodiversity Park) फार्म वन विघा (STATE PLAN) के अन्तर्गत चिरौजी के पौधो का नर्सरी में उत्पादन एवं रोपण प्राथमिकता के आधार पर किया जा सकता है।
- वन विभाग द्वारा स्थानीय समुदायो को जागरूक कर चिरौजी वृक्षो कें सरक्षण एव संवर्धन को बढावा देने के लिए प्रक्षिशण कार्यक्रम संचालित किये जा सकते है।
- चिरौजी की व्यावसायिक खेती को प्रोत्साहित करने हेतु स्थानीय किसानो एवं वनाधिकार पट्टाघारियो को आर्थिक एवं तकनीकी सहायता उपलब्ध करवाई जा सकती है।
- चिरौजी वृक्षो की संख्या बढानें के लिये सामाजिक वानिकी सामुदायिक भागीदारी एवं जल ग्रहण क्षेत्र विकास कार्यक्रमो से इसें जोडा जा सकता है।

चिरौजी (Buchanania lanzan) को प्रोत्साहित करने हेतु बारां जिले के लिऐ प्रस्तावित कार्य योजनाः–

चिरौजी के संवर्धन और विकास के लिए बारां जिले में चरणबद्ध कार्य योजना प्रस्तुत की जा रही है।

प्रारंभिक चरण एवं– जागरूकता एवं बुनियादी तैयारी

1 नर्सरी स्थापना एवं पौधों की उपलब्धताः–

- वन विभाग की नर्सरियो में चिरौजी के पौघो का उत्पादन बढाया जायेगा प्रारंभिक चरण में 1000 पौधो की तैयारीयो का लक्ष्य रखा जायेगा।

2 जन जागरूकता अभियानः–

- शाहाबाद रैजं में प्रत्येक माह पंचायत स्तर पर चिरौजी के वृक्षारोपण एवं उसके उत्पादों के सम्बन्घ में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये जायेगे
- सोशल मिडिया, पोस्टर, बैनर और समाचार पत्रो के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाया जायेगा
- जिला एवं ब्लॉक स्तर पर कार्यक्रमो का आयोजन किया जायेगा

3 पायलट वृक्षारोपण एवं पौध वितरणः–

- आम जनता को चिरौजी के पौधो का वितरण एवं पौधारोपण की जानकारी पंचायत समिति और वन विभाग के सहयोग से प्रदान की जायेगी। प्रत्येक पंचायत में 50–100 पौधे लगाये जायेंगे।
- सडक किनारे, सरकारी स्कूलो, आंगनबाडी केन्द्रो सरकार भवनो ओर पंचायत भवनो के आसपास वृक्षारोपण किया जायेगा।
- प्रथम वर्ष में 1000 चिरौजी के पौघो के वितरण का लक्ष्य रखा जायेगा।

4 चिरौजी के व्यावसायिक संभावनाओ सम्बन्धित प्रशिक्षण

- किसानो और ग्रामीण महिलाओं को चिरौजी आधारित लघु उद्योग की ट्रेनिग दी जायेगी।

विस्तार एवं प्रसंस्करण चरण

1. वृक्षारोपण विस्तार :

- 3 गुना अधिक क्षेत्र में वृक्षारोपण किया जाएगा।
- लक्ष्य : कम से कम 3000 वार्षिक चिरौजी के पौधे तैयार करने की क्षमता विकसित करना।
- वन क्षेत्र में होने वाले वृक्षारोपण योजनाओं में कुल वृक्षारोपण में स्थानीय परिस्थितियों को देखते हुए कम से कम 2 प्रतिशत चिरौजी के पौधारोपण को अनिवार्य रूप से शामिल करना।
- किसानो को चिरौजी को वागवानी के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया जाएगा
- सामुदायिक भागीदारी और स्वयं सहायता समूहों (SHG) के माध्यम से निजी भूमि पर वृक्षारोपण को बढावा दिया जायेगा।

2. चिरौंजी उत्पादों की प्रदर्शनी एवं जागरूगताः

- चिरौंजी की मिठाई और ड्राई फ्रुट्स के माध्यम से समूहो (SHG) को जानकारी दी जायेगी एवं कैसे इससे आजीवीका सृजन किया जा सकता है के संबंध में जानकारी दी जायेगी।
- बंजर और अनुपयोगी भूमि को हरा भरा बनाने हेतु चिरोंजी वृक्षो को प्राथमिकता दी जायेगी।

3. प्रचार–प्रसार एवं जन भागीदारीः

- ग्राम पचांयत, ब्लॉक एवं जिला स्तर पर किसानो, स्थानीय समुदायों और पंचायत समितियों को शामिल किया जायेगा।
- प्रदर्शनी , कार्यशालाऐ, किसान सभाये एवं विद्यालयों में व्याख्यान आयोजित किये जोयेगे।

4. जागरूकता अभियानः

- पंचायत स्तर पर सामग्री (पर्चे, पोस्टर, सोशल मिडिया) का विवरण किया जायेगा।

5. पोधौ की उपलब्धता एवं विवरणः

- उच्च गुणवत्ता वाले चिरोंजी पोधौ का उत्पादन कर TOFR, RFBP, फार्म वर विधा योजनाओं के माध्यम से आम जनता , ग्रामीणों, स्कूलों एवं पंचायतो को वितरित किया जायेगा।

6.चिरौंजी आधारित उद्योग एवं रोजगार संवर्धनः

- महिला एवं सहायता समूहो, ग्रामीणों, किसानों को चिरौंजी से तैयार होने वाले उत्पादो की जानकारी एवं प्रशिक्षण दिया जायेगा ताकि रोजगार सृजन को बढावा मिले और उनकी आय मे बढोतरी हो।

वन विभाग द्वारा रामगढ क्रेटर को पर्यटन स्थल एवं चिरौंजी को विकसित करने हेतु किये गये कार्य

1. रामगढ क्रेटर को ईको–टूरिज्म स्थल के रूप में विकसित करने के उद्येश्य से इसे बारां वनमण्डल की कार्ययोजना में सम्मितिल करना।
2. रू 9 करोड की विस्तृत परियोजना रिर्पोट DPR तैयार कर राज्य सरकार को प्रस्ताव हेतु भेजी जा चूकी है।
3. गार्ड चौकी के निर्माण के लिए निविदा जारी की जा चूकी है।
4. बारां जिला परिषद मे राज्य सरकार के 1 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में 2 दिवसीय प्रर्दशनी में विभागीय स्टॉल का अयोजन।
5. गंणतत्र दिवस के अवसर पर ईको–टूरिज्म तथा चिरौंजी के प्रचार प्रसार हेतु ट्रैक्टर झांकी का निर्माण एवं प्रदर्शन।

5 खेल विभाग

पंच गौरवः एक जिला–एक खेल–फुटबॉल

पंच गौरव योजना के अन्तर्गत एक जिला एक खेल में फुटबॉल खेल को शामिल किया गया हैं। फुटबॉल खेल बारां का प्रचलित खेल हैं, तथा राजस्थान में फुटबॉल खेल में बारां जिले की विशेष पहचान रही हैं। बारां में प्रति वर्ष राज्य स्तरीय एवं राष्ट्रीय स्तर की फुटबॉल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता हैं तथा बडी संख्या में नियमित रूप से खिलाडी (बालक एवं बालिकाए) फुटबॉल खेल का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। जिला मुख्यालय के साथ फुटबॉल छीपाबडौद, अटरू, अन्ता, मांगरोल में भी लोकप्रिय खेल हैं। जिला फुटबॉल संघ बारां भी फुटबॉल खिलाडियों का विशेष ध्यान रखता हैं, तथा उनको फुटबॉल खेल खेलने के लिए प्रेरित करता हैं। बारां मुख्यालय पर फुटबॉल खेल के दो मैदान बने हैं, प्रथम खेल संकुल द्वितीय श्रीराम स्टेडियम। इन दोनों मैदानों पर नियमित रूप से खिलाडी फुटबॉल खेल का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। बारां जिले से निम्न खिलाडियों ने राष्ट्रीय स्तर पर जिले का प्रतिनिधित्व किया हैं :–

1. कालूलाल गुर्जर–संतोष ट्रोफी
2. सतीश सिंह –संतोष ट्रोफी
3. अमितमदान–राष्ट्रीय खिलाडी एवं एन.आई.एस. कोच
4. विजय सिंह –संतोष ट्रोफी
5. महावीर माथोडिया–संतोष ट्रोफी
6. राजेश गौत्तम–संतोष ट्रोफी
7. हर्ष चौधरी–जूनीयर नेशनल
8. मानव शर्मा–जूनीयर नेशनल

फुटबॉल खेल को विकसित करने हेतु निम्न प्रयास किये गये हैं जिनका विवरण इस प्रकार हैंः–

1. बारां में फुटबॉल खेल की अकादमी का प्रस्ताव राज्य सरकार का प्रेषित किया जा चुका हैं जो कि प्रकियाधीन हैं।
2. एक जिला एक खेल के तहत 8 हेक्टर की भूमि का आवंटन हो चुका हैं।
3. श्रीराम स्टेडियम का आधुनिकीकरण करने हेतु 6.00 करोड़ का प्रस्ताव राज्य सरकार को भेज दिया गया हैं। जो वित्त विभाग में प्रकियाधीन है।
4. एक जिला एक खेल के तहत फुटबॉल खेल में फुटबॉल प्रशिक्षक की नियुक्ति कर दी गई हैं।

पंच गौरव के तहत श्रीराम स्टेडियम को और अधिक विकसित करने हेतु उक्त बजट की आवश्यकता होगी जिससे श्रीराम स्टेडियम को विकसित करने के साथ–साथ खिलाडियों को इसका लाभ प्राप्त हो सकेगा। उक्त प्रस्ताव को प्रेषित किया जा चुका हैं।